पाठ 2 **जनवरी 6-12**

मैं देखता हूँ, मैं चाहता हूँ, मैं लेता हूँ

सब्त अपराह्न **जनवरी 6**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : 2कुरि० 8: 1-7; मत्ती 13: 3-7, 22; उत्प० 3: 1-6; यशा० 56: 11; मत्ती 26: 14-16; 2पत० 1: 5-9 ।

याद वचन : *"जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता" (मत्ती 13: 22)।*

रुपये और भौतिक अधिकारों का प्रेम हम पर भिन्न-भिन्न तरीके से आ सकता है। एलेन जी० ह्वाईट भौतिकवाद के छल कपटों द्वारा हमें आकर्षित करने के शैतान की तिकड़म का वर्णन करती है। "जाओ, रुपये और भूसम्पत्ति के मालिकों को जीवन की परवाहों से मदहोश कर दो। संसार को इसके अति आकर्षक प्रकाश में उनके सामने पेश करो कि वे अपना खजाना यहाँ पर लगाएँ, और अपना प्रेम पार्थिव चीजों पर लगाएँ। हमें उन्हें रोकने के लिये हमारी अधिकतम कोशिश करनी होगी जो हमारे विरुद्ध प्रयुक्त होने वाले साधनों को प्राप्त करने के लिये परमेश्वर के निमित्त परिश्रम करते हैं। रुपये हमारे स्वयं की श्रेणियों (मंडलियों) में रखी जाये। जितने अधिक साधन वे प्राप्त करते हैं उतनी अधिक हमारी प्रजाओं को लेने के द्वारा वे हमारे राज्य को नुकसान पहुँचाएँगे। परमेश्वर के राज्य के निर्माण की अपेक्षा उन्हें अधिक धन के संरक्षण के लिये विवश करें। और उस सच्चाई को प्रसार की रोकथाम जिसे हम नहीं चाहते, हमें उसके प्रभाव से डर की आवश्यकता नहीं; क्योंकि हम जानते हैं प्रत्येक स्वार्थी, लालची व्यक्ति हमारी सत्ता के अधीन गिर पड़ेगा, और अंतत: परमेश्वर के लोगों से अलग हो जाएगा।" कौंसेल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 154, 155।

दुर्भाग्यवश यह तिकड़म बेहतर काम कर रहा लगता है। चलिये तब इन खतरों पर हम नजर डालते हैं और परमेश्वर का वचन हमें क्या कहता है कि हम आत्मिक फंदे से कैसे बच सकते हैं।

रविवार **जनवरी 7**

समृद्धि सुसमाचार

एक लोकप्रिय टेलीविजन प्रचारक का एक सामान्य संदेश है: परमेश्वर

- सब्त फरवरी 13 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

आप को आशीषित करना चाहता है, और उसकी आशीष का प्रमाण भौतिक अधिकारों की प्रचुरता है जिसके आप स्वामी हैं। दूसरे शब्दों में, यदि आप विश्वस्त हैं, परमेश्वर आपको संपन्न करेगा।

यह विचार अथवा इसका भिन्न रूप समृद्धि सुसमाचार कहा गया है: परमेश्वर के पीछे हो ले और वह आपको सांसारिक चीजों में समृद्ध करेगा। यह विचार कुछ नहीं पर भौतिकवाद के लिये एक झूठा धर्मविज्ञान संबंधी प्रामाणिकता है, क्योंकि वास्तव में यह जो कह रहा है, क्या आप भौतिकवादी होना चाहते हैं और इसके विषय बेहतर महसूस करना चाहते हैं? ठीक है, हमारे पास आप के लिये "सुसमाचार" है।

तथापि सुसमाचार को गारण्टीशुदा धन के साथ जोड़ना गुमराह किया हुआ तमाशा है। यह विश्वास पवित्रशास्त्र के साथ वैषम्य पैदा करता है और स्व-केंद्रित धर्मविज्ञान को प्रतिबिम्बित करता है जो बाईबलीय भाषा में अर्द्ध-सत्य पहनावा के सिवाय कुछ नहीं है। सब पापों के अंतर भाग में इस झूठ का मुदा है और वह है अहम, और हर चीज से बढ़कर स्वयं को प्रसन्न करने की अभिलाषा।

समृद्धि सुसमाचार का धर्मविज्ञान सिखलाता है कि परमेश्वर को देने से हम वापसी में भौतिक संपत्ति की एक गारण्टी प्राप्त करते हैं। परन्तु यह परमेश्वर को एक वेंडिंग (Vending) मशीन बना देता है और उसके साथ हमारे संबंध को कुछ नहीं पर एक सौदा बना देता है: मैं यह करता हूँ और बदले में आप वह करने की प्रतिज्ञा करें। हम देते इसलिये नहीं कि यह अच्छी बात है पर देते इसलिये हैं कि बदले में हम प्राप्त करते हैं।

यही है समृद्धि सुसमाचार।

पढ़ें 2कुरिन्थियों 8:1-7। यहाँ क्या हो रहा है? इन पदस्थलों में हम कौन-से सिद्धातों को देखते हैं जो समृद्धि सुसमाचार के इस विचार के खिलाफ जाता है? पौलुस का क्या तात्पर्य है जब वह "देने के अनुग्रह" की बात करता है? (2कुरि० 8:7)।

_____

_____

_____

"अत्यन्त गरीबी" के बावजूद भी ये लोग अपने सामर्थ्य से बढ़कर देने में बहुत उदार थे। (2कुरि० 8:2), इस प्रकर के पदस्थल और अन्य समृद्धि सुसमाचार के झूठे धर्मविज्ञान को खण्डन करने में मदद करते हैं, जो सिखलाता

है कि यदि आप परमेश्वर के साथ यथार्थ जीवन जी रहे हैं इसे दिखाने के लिये आप के पास पर्याप्त भौतिक अधिकार होंगे।

उन लोगों में आप कौन-से उदाहरण पा सकते हैं जो परमेश्वर के प्रति विश्वस्त हैं लेकिन सांसारिक चीजों में धनी नहीं हैं, और वे जो परमेश्वर के प्रति विश्वस्त नहीं हैं लेकिन सांसारिक चीजों में धनी हैं? परमेश्वर की आशीषों के एक संकेतक के तौर पर धन के इस्तेमाल के विषय में यह हमें क्या बतलाना चाहिए?

सोमवार **जनवरी 8**

धुँधला आत्मिक दृष्टि

एक सुस्पष्ट सत्य को हमें सिखाने के लिये बाईबल की हमें आवश्यकता नहीं: इस जीवन की चिंताएँ और इसकी औकात अस्थायी हैं। कुछ भी यहाँ टिकाऊ नहीं, और निश्चित रूप दीर्घ नहीं। जैसा पौलुस ने कहा: "और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ बनी रहती हैं" (2कुरि० 4:18), मसीहियों की अदूरदर्शी दृष्टि होती है जब वे स्वर्गीय मार्ग के बजाय इस संसार की परवाह में ग्रस्त हो जाते हैं। प्रचुर धन- सम्पत्ति के कपट की अपेक्षा अल्प चीजें उनकी आँखों को उस मार्ग से अंधा कर सकती है। हेलेन केलर, जो एक नेत्रहीन थी, ने कहा: "सबसे दयनीय व्यक्ति इस संसार में वह है जिसकी आँखें हैं परन्तु दृष्टि नहीं।" बाईबल उन लोगों के उदाहरणों से भरी पड़ी है जो देख तो सकते थे पर वास्तव में आत्मिक रूप से अंधे थे।

"कुछ लोग इस संसार को इतना प्रेम करते हैं कि सच्चाई के निमित्त यह उनके प्रेम को निगल जाता है। जैसा उनका खजाना यहाँ बढ़ता है, स्वर्गीय खजाने में उनकी रुचि घटती है। जितना अधिक इस संसार को कब्जा करते हैं उतने अधिक निकट से वे इसे उनके गले लगाते हैं, मानो डर स्वरूप उनका आकांक्षित खजाना उनसे ले लिया जाएगा। जितना अधिक वे हासिल करते हैं उतना कम वे दूसरों पर दान करते हैं, क्योंकि जितना अधिक उनके पास है उतना अधिक वे गरीबी महसूस करते हैं। ओह, अमीरों का कपट! वे परमेश्वर के मकसद की जरूरतों को नहीं देखेंगे और महसूस करेंगे।" एलेन जी० व्हाईट, स्पीरिचुअल गिफ्ट्स वॉल्यूम 2, पेज 267।

धुंधली आत्मिक दृष्टि अनंत उद्धार को जोखिम में डाल देती है। यीशु को दृष्टि में रखना काफी नहीं है; हमें उसे केंद्रबिन्दु में रखना चाहिए।

पढ़ें मत्ती 13:3-7 एवं 22। यीशु यहाँ पर हमें किस खतरे के विषय आगाह कर रहा है? अमीर या गरीब किसी के लिये इसमें गिरना, यह क्यों एक सहज फंदा है?

पहला, यीशु "संसार की चिंता" के विषय हमें चिताता है (मत्ती 13:22), यीशु जानता है कि हमारी आर्थिक एवं अन्य चिन्ताएँ है। गरीब चिंता करते हैं कि उनके पास पर्याप्त नहीं है, अमीर चिंता करते हैं कि और किस चीज की उन्हें जरूरत है। हमें निश्चित होने की जरूरत है कि हमारे जीवन में ऐसी चिंताएँ न आएँ। "वचन को अवरुद्ध करता है" (मत्ती 13:22)।

दूसरा यीशु हमें "अमीरी के छल" (मत्ती 13:22) के विषय चिताता है। यद्यपि अमीरी अपने आप में बुरी नहीं है, अभी भी उस रास्ते पर हमें छलने (धोखा देना) की उनके पास ताकत है जो हमें अंतिम विनाश की ओर ले चलती हैं।

कौन-से तौर-तरीके हैं जो आप स्वयं के जीवन में "धन के धोखे" को देख सकते हैं? इस धोखे से स्वयं को बचाने के लिये आप कौन-से व्यावहारिक चुनावों को कर सकते हैं?

मंगलवार **जनवरी 9**

लालच के कदम

सब पापों की तरह, लालच भी हृदय में प्रारंभ होता है। यह हमारे अन्दर शुरू होता है और तब बाहर कार्य करता है। यही है जो अदन में हुआ।

पढ़ें उत्पत्ति 3:1-6, हवा को पाप की ओर आकर्षित करने के लिये शैतान ने क्या किया? युगों से हमें भी धोखा देने के लिये उसने उन्हीं सिद्धांतों को कैसे इस्तेमाल किया है?

"सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया" (उत्प० 3:6)।

यदि कोई बेहतर न जाना, कोई सोच सकता है कि विज्ञापन उद्योग ने अदन की बारी से अपने उत्पादों को बेचने के इसके प्रतिमान संबंधी उदाहरण को प्राप्त किया। शैतान ने वर्जित पेड़ के फल को हवा में एक अभिलाषा

जागृत करने के तौर पर पेश किया कि वह अधिक से अधिक चाहने लगे और वह सोचे कि वाकई उसे इसकी जरूरत है। कितना उत्कृष्ट! उसका पतन तीन सोपानों का प्रदर्शन है हम प्रत्येक इसे लेते हैं जब लालच में गिर जाते हैं: मैं देखता हूँ, मैं चाहता हूँ, मैं लेता हूँ।

निस्संदेह लालच एक नि:शब्द पाप हो सकता है। वासना की तरह यह हमारे शरीर के अंदर छिपा रहता हैं, परन्तु जब यह फलदायी होता है, यह विध्वंसकारी हो सकता है। यह संबंधों को बिगाड़ सकता है, आपके प्रियजनों पर दहशत छोड़ सकता है, और बाद में हमें अपराध बोध से धिकारता है। लालच दिखे, और यह किसी सिद्धान्त को निरस्त करेगा। राजा आहाब ने नबोत की दाखबारी को देखा, इसे चाहा, और रानी इसके लिये नबोत के मारे जाने तक मुँह फुलाये रही (1राजा 21) आकान रुक न सका जब उसने कपड़े और रुपये देखे, अत: उसने लालच किया और उन्हें ले लिया (यहोशू 7: 20-22)। आखिरकार लालच दूसरे प्रकार का स्वार्थ है।

"यदि स्वार्थ पाप का प्रचलित रूप हो सकता है तो लालच स्वार्थ का प्रचलित रूप समझा जा सकता है। यह आश्चर्यजनक ढंग से प्रेरित पौलुस द्वारा बतलाया जाता है, जब अंतिम धर्मत्याग के संकटपूर्ण समय में व्याख्या की जाती है, वह सभी बुराईयों की बहुफलदायक जड़ के तौर पर स्वार्थ को चित्रित करता है जो तब इसका पहला फल लालच के तौर पर प्रचलित होगा। "क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी होगा" (2तीमु० 3: 2)" जोन हैरिस, मैमोन, (न्यूयॉर्क: लेन एण्ड स्कॉट, 1849) पेज 52.

लालच की ओर कोई और सभी प्रवृतियों को हमें स्वयं में पहचान करना क्यों महत्त्वपूर्ण है?

बुधवार **जनवरी 10**

लालसा-चीजों को आपके तरीके से रखना

पढ़ें यशायाह 56: 11. यह चितौनी किस पाप के विषय में है?

पतित मनुष्यों के तौर पर हमारे लिये लालच वैसा ही सहज हो सकता है जैसा श्वसन। और ठीक जैसा स्वाभाविक भी है। यद्यपि किसी चीज को मानव-चरित्र में कल्पना करना कठिन है, वह लालच की अपेक्षा मसीह के चरित्र को कम परावर्त्तन करना है। "तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ" (2कुरि० 8: 9)।

संपूर्ण इतिहास में लालच ने जो क्षति पहुँचायी है केवल परमेश्वर जानता है। लालच ने लड़ाईयों को उकसाया है। लालच ने लोगों को अपराध करने को विवश किया है जिसने स्वयं और अपने परिवारों में बर्बादी लायी है। लालच एक विषाणु के समान हो सकता है जो अपने मेजबान पर चिपका रहता है और हरेक सद्‌गुण को बर्बाद करता है जब तक कि जो बचा है अधिक से अधिक लालच न करने लगे। लालच एक बीमारी है जो इश्क, शौर्य एवं स्वामित्व सब कुछ चाहता है। पुनः मैं देखता हूँ, मैं चाहता हूँ, मैं लेता हूँ।

पढ़ें मत्ती 26: 14-16। इस दु:खद कहानी से लालच की शक्ति के विषय हम क्या सीख सकते हैं?

यहूदा के शब्दों पर गौर करें: "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ, तो मुझे क्या दोगे?" (मत्ती 26: 15), लालच को प्रत्येक चीज को निरस्त करने देने के विषय बात करें। पूरे इतिहास में बहुत कम लोग हैं जिस प्रकार यहूदा को सुअवसर प्राप्त था: वह साक्षात् यीशु के साथ रहा, उसके चमत्कारों को देखा, और जीवन के वचन प्रचार करते हुए उसे सुना। और तब भी – देखिये लालच और तृष्णा ने उसे क्या करने को अग्रसरित किया।

"कितने प्रेम से उद्धारकर्ता ने उसके साथ वर्ताव किया जो उसका विश्वासघाती होने वाला था! अपनी शिक्षा में यीशु ने भलाई के सिद्धांत पर चर्चा की जिसने लालच की जड़ पर प्रहार किया। उसने यहूदा के सामने लालच के जघन्य चरित्र को पेश किया, और बहुत बार शिष्य ने महसूस किया कि उसका चरित्र चित्रित किया जा रहा था और उसका पाप दिखाया जा रहा था; परन्तु उसने न अंगीकार किया और न अपने अधर्म का त्याग किया।"– एलेन जी० ह्वाईट, द डिजायर ऑफ एजेस, पेज 295।

यदि सतर्क नहीं, कौन अपने स्वयं के चरित्र में कुछ लालच को स्पष्ट नहीं करता है? हम किस प्रकार परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा इस स्वाभाविक प्रवृति को नियंत्रण में रख सकते हैं?

बृहस्पतिवार **जनवरी 11**

आत्म-संयम

अग्रांकित पदस्थलों को पढ़ें। वे क्या कह रहे हैं जो हमें समझने में मदद कर सकते हैं और करना चाहिए, किस प्रकार लोग अमीर या गरीब खतरों से स्वयं की सुरक्षा कर सकते हैं, जो मसीही को रुपये और भौतिक चीजों का

लालच, तृष्णा, और प्रेम पेश कर सकता है? प्रेरितों 24: 24-26 _____

_____

गला० 5: 22-25 _____

_____

2पतरस 1: 5-9 _____

_____

हमें किस प्रकार जीवन जीने के बारे में ये अवतरण समृद्ध और ईश्वरीय आदेश से भरपूर है। लेकिन एक सामान्य कड़ी पर गौर करें: आत्म-संयम। यह विशेषता खास रूप से मुश्किल हो सकती है जब यह लालच, तृष्णा, और चीजों को पाने की लालसा पर आ जाती है। केवल आत्म-संयम के द्वारा पहले हमारे विचार और तब हमारे कार्य, उन चीजों के खतरों से बचाये जा सकते हैं जिनके विषय हम बातें करते आ रहे हैं।

हम उस नियंत्रण का अभ्यास केवल उस स्तर तक कर सकते हैं जितना हम स्वयं को परमेश्वर के सामर्थ्य के हवाले करते हैं। हम में से कोई, स्वयं के द्वारा, इन पापमय विशेषताओं को हरा नहीं सकता, विशेष रूप से यदि वे लम्बे समय तक विकसित और चाहे जाएँ। हमें वास्तव में हमारे जीवन में पवित्रात्मा की अलौकिक कार्य की जरूरत है, यदि हमें इन शक्तिशाली छलों पर विजय प्राप्त करना है। "तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है; और परमेश्वर सच्चा है वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको (1कुरि० 10: 13)।

पुन: पढ़ें 2पतरस 1: 5-9। कौन सा रास्ता है जो पतरस इंगित करता है? इसके सोपान क्या हैं, और उन्हें अनुकरण करना हम कैसे सीख सकते हैं, विशेष रूप से तृष्णा और लालच के खिलाफ हमारे संघर्ष में?

शुक्रवार **जनवरी 12**

अतिरिक्त अध्ययन: अंतत: मनुष्य का ध्येय खुश रहना और संतुष्ट रहना है। परन्तु भौतिकवाद के द्वारा संपूर्णता इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं करेगा। असल में लोग इस सत्य को जानते हैं, और फिर भी वे स्वामित्व के साथ अपने जुनून में लगे रहते हैं: मैं देखता हूँ, मैं चाहता हूँ, मैं लेता हूँ। इससे सामान्यतम क्या हो सकता है? दूसरों की तरह सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट भी भौतिकवाद के मोल से सहमत होने के छल का सामना करते हैं। तथापि चीजों का निरंतर अर्जन खुशी तसल्ली, या संतुष्टि का निर्माण नहीं कर सकता। तथापि यह समस्याओं को जन्म देता है जैसा देखा गया है जब धनवान युवा शासक निराश, आशाहीन,

और बुझे दिल के साथ वापस चला गया क्योंकि उसने नहीं सुना या प्राप्त किया जो वह चाहता था। "सांसारिक मोल लोगों के कुशलक्षेम के एक व्यापक खोखलेपन, अधम जीवन संतुष्टि और खुशी से, तनाव और चिंता शारीरिक समस्याएँ जैसे सिर दर्द, और व्यक्तित्व अव्यवस्थाएँ, आत्ममोह, एवं असामाजिक व्यवहार से संबंधित है।"- टिमकेजर, द हाई प्राइस ऑफ मेटेरियलिज्म, पेज 22।

दूसरे शब्दों में, सांसारिक मसीही अभिमानपूर्वक धन के कुएँ से पीते हैं परन्तु आत्मिक रूप से निर्जलित हैं। परन्तु हम मसीह के दिये पानी पीने से कभी प्यासे न होंगे (यूहन्ना 4: 14)।

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न :

1. समृद्धि सुसमाचार के विचार पर चिंतन करें। जो इस विचार में विश्वास करते हैं, इसे बढ़ावा देने की कोशिश में किन अवतरणों का प्रयोग करते हैं? इसी समय बाईबल से विश्वस्त लोगों के कौन से उदाहरण आप पा सकते हैं जिनका जीवन इस झूठी शिक्षा का जीवित खण्डन है?
2. एक व्यक्ति ने जब उसका पहला बच्चा कुछ वर्षों का हुआ, कहा: "मैंने इस बच्चे से दो महत्त्वपूर्ण बाईबल सत्यों को सीखा है। प्रथम, कि हम जन्म से पापी हैं। दूसरा, कि हम जन्म से लालची हैं।" बच्चे भी प्रगट करते हैं कि हम मानव प्राणी होकर स्वाभाविक रूप से कितने लालची हैं ऐसी कहानियों को कौन संबंध कर सकता है? ईश्वरीय अनुग्रह के विषय यह हमें क्या बतलाती है?
3. "यदि हम हमारी मुसीबतों के स्रोत को ढूंढ़ रहे हैं, किसी ने लिखा "हमें नशीले पदार्थों के लिये लोगों का परीक्षण नहीं करना चाहिए- हमें मूर्खता अज्ञानता, लालच, और सामर्थ्य के लिये प्रेम के विषय उनका परीक्षण करना चाहिए।" लालच के विषय यह क्या है जो इतना अहितकर है, केवल स्वयं लालची व्यक्ति के लिये ही नहीं वरन उन सभों के लिये जो उसके इर्द-गिर्द हैं? आप कौन से उदाहरणों को जानते हैं जिसमें लालच ने सभी सम्मिलितों पर भयंकर क्षति पहुँचायी है?